ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 39-40**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

पत्रकारिता : स्वरूप और विकास

सोनू कुमारी, 2. डॉ0 वीरेन्द्रनाथ मिश्र

शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी. आर. ए. बिहार, मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-13.07.2025, Revised-20.07.2025, Accepted-27.07.2025 **E-mail : sonukumari9771@gmail.com**

सारांशः ***जिस तरह साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है इसी तरह पत्रकारिता को भी समाज का दर्पण कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। पत्रकारिता मनुष्य की आस्थाओं, विचारों, मनुष्यों को सही रूप में जनता के सामने रखती है। ऐसे में पत्रकारिता लक्ष्य साहित्यिक–कलात्मक रूझान को बढ़ाना, नैतिक तथा सामाजिक मूलयों की प्रतिष्ठा करना, भौतिकवादी दुनिया में सही मार्ग दिखाना, सुखी जीवन के द्वार खोलना आदि। पत्रकारिता जन सेवा का सशक्त माध्यम है। वर्तमन में आधुनिक तकनीकी विद्याओं की प्रतिक्रिया को एक नई दिशा दी है जिसके कारण चुनौतिपूर्ण अभियान कम और व्यवसाय ज्यादा बन गई है। वस्तुतः पत्रकारिता का प्रथम व प्रमुख कर्तव्य अन्याय को उजागरण करना, परामर्श देना, समाज का मार्गदर्शन करना तथा व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र का बहुआयामी उत्थान करना होता है।***

कुंजीभूत शब्द– **पत्रकला, दैनन्दिनी, रोजनामचा, आधुनिक, युगबोध, शुभदृष्टि, समदृष्टि, अनुसंधात्मक, श्रमसाध्य , बहुआयामी ।**

परिचय – पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' का हिन्दी अर्थ है। 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' से बना है, जिसका अर्थ होता है दैनिकी, दैनन्दिनी, रोजनामचा अर्थात् जिस दैनिक कार्यों का विवरण हो।

वर्त्तमान में जर्नल शब्द 'मैगजीन', 'समाचार पत्र', 'दैनिक अखबार', का द्योतक है। 'जर्नलिज्म' यानी पत्रकारिता का अर्थ समाचार पत्र, पत्रिका से जुड़ा व्यवसाय, समाचार संकलन, लेखन, संपादन, प्रस्तुतीकरण वितरण आदि होगा। वर्तमान दौर में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गये है जैसे– अखबार पत्रिकाएँ रेडियो, दूरदर्शन, वेब–पत्रकारिता, सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि।

मुख्य भाग – वृहत हिन्दी शब्दकोश के अनुसार 'पत्र' का अर्थ चिट्ठी, कागज, वह कागज जिसपर कुछ लिखा या छपा हो, वह कागज या धातु की पट्टी जिस पर किसी व्यवहार के विषय में कोई प्रामाणिक लेख लिखा या खुदवाया गया हो। पत्रकार का अर्थ समाचार पत्र का संपादन या लेखक और 'पत्रकारिता' का अर्थ पत्रकार का काम या पेशा, समाचार के संपादन, समाचार इकट्ठा करने आदि का विवेचन करने वाली विद्या। श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर ने 'पत्रकला' और 'पत्रकार–कला' शब्द का प्रयोग किया है। उनके अनुसार "ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकला है।"[1] पत्रकारिता से स्पष्ट है कि समाचारों का संकलन और इसका प्रसारण या वितरण। खाडिलकर जी ने 'पत्रकार–कला' के संदर्भ में लिखा है– "छापने वाले लेख–समाचार तैयार करना ही पत्रकारिता नहीं रह गयी। आकर्षक शीर्षक देना, पृष्ठों का आकर्षक बनाव–ठनाव, जल्दी से जल्दी समाचार देने की होड़, देश–विदेश के प्रमुख उद्योग–धन्धों के विज्ञापन प्राप्त करने की चतुराई, सुन्दर छपाई और पाठक के हाथ में सबसे जल्दी पत्र पहुँचा देने की त्वरा ये सब पत्रकार के अन्तर्गत आ गये।"[2]

वृहत हिन्दी शब्दकोश में साफ है कि पत्र का अर्थ वह कागज या साधन जिस पर कोई बात लिखी या छपी जो प्रामाणिक हो, जो किसी घटना के विषय को प्रमाणरूप पेश करता है। पत्रकार का अर्थ इस पत्र, कागज को लिखनेवाला, संपादन करनेवाला पत्रकारिता का अर्थ इसका विवेचन करनेवाली विद्या।

पत्रकारिता आधुनिक युगबोध, राष्ट्रीय चेतना, जन जागरूकता एवं व्यापक जन संवेदना को संप्रेषित करने का सर्वसुलभ उन्नत जन माध्यम है। यह लोक मानस की सामुदायिक सहभागिता की वह जीवंत विद्या है, जिसमें जनता की आत्मा के स्तर, उसके सुख–दुःख, जय–पराजय, आशा, आकांक्षा तथा सामयिक एवं सनातन सत्य मुखर हो उठते हैं।

"समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व–बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं।"[3] 'गीता' में 'शुभदृष्टि' शब्द का प्रयोग है यह शुभदृष्टि ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। गांधी जी 'समदृष्टि' को महत्व देते थे। समाज हित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता हैं असत्य, अशिव और असुदर पत्र 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है। 'हिन्दी शब्द सागर' में पत्रकारिता को 'पत्रकार का काम या व्यवसाय' कहा गया है। जबकि डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने पत्रकारिता को पेशा नहीं जनता की सेवा माना है। डॉ. बद्रीनाथ कपूर का कहना है कि समाचार माध्यमों के लिए किए जानेवाले कार्य समाचार संकलन, लेखन एवं संपादन, प्रकाशन कार्य ही पत्रकारिता है।

चैम्बर तथा न्यू वेब्स्टर्स शब्दकोश के अनुसार– प्रकाशन, संपादन लेखन एवं प्रसारण युक्त माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है। सी.जी. मुलर ने पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए लिखा है– "सामयकि ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्यांकन एवं ठीक–ठाक प्रस्तुतीकरण होता है।"[4] विल्वर श्रम का कहना है कि जनसंचार उसे कहा जा सकता है जो व्यक्ति से लेकर समूह तक और देश से लेकर विश्व तक को विचार, अर्थ, राजनीति और यहां तक कि संस्कृति को भी प्रभावित करने में सक्षम हैं जेम्स मैकडोनल्ड के विचारानुसार पत्रकारिता दर्शन है जिसकी क्षमता युद्ध से भी ताकतवर है। विखेम स्टीड पत्रकारिता को कला, पेशा और जनसेवा का संगम मानते हैं।

पत्रों के अतिरिक्त आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की पत्रकारिता के अंग है। पत्रकारिता की परिभाषा व्यापक है किन्तु सभी विद्वानों के आधार पर पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है। यह एक कलात्मक सेवा कार्य है जिसमें सामयिक घटनाओं को शब्द एवं चित्र के माध्यम से जनज न तक आकर्षक ढंग से पेश किया गया हो और जो व्यक्ति से लेकर समूह तक देश से लेकर विश्व तक की संस्कृति को प्रभावित करता है।

जिस प्रकार सभी विषयों का कई अलग–अलग क्षेत्र होता है उसी प्रकार पत्रकारिता का भी अलग–अलग क्षेत्र है। यहीं विभिन्न क्षेत्र पत्रकारिता का स्वरूप निर्धारण करता है। एन.सी.पन्त ने पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों को निम्नवत् वर्गीकृत किया है :
"1. अन्वेषी (खोजी) पत्रकारिता, 2. आर्थिक पत्रकारिता, 3. ग्रामीण पत्रकारिता, 4. व्याख्यात्मक पत्रकारिता, 5. विकास पत्रकारिता, 6. संदर्भ पत्रकारिता, 7. संसदीय पत्रकारिता, 8. खेल पत्रकारिता, 9. बाल पत्रकारिता, 10. विज्ञान पत्रकारिता, 11. चित्रपट पत्रकारिता, 12.

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

वृतान्त पत्रकारिता, 13. रेडियो पत्रकारिता, 14. दूरदर्शन पत्रकारिता, 15. फोटो पत्रकारिता, 16. सर्वोदय पत्रकारिता, 17. विधि पत्रकारिता, 18. अन्तरिक्ष पत्रकारिता।"[5]

1. **अन्वेषी (खोजी) पत्रकारिता :** सच्चाई को गहराई से उजाग करना ही अन्वेषी पत्रकारिता कहलाता है। इसे खोजी और अनुसंधात्मक पत्रकारिता भी कहा जाता है। यह सामान्य पत्रकारिता से अलग है। यह समय साध्य, व्ययसाध्य, कष्टसाध्य और श्रमसाध्य है। तथ्यों को एक कड़ी से दूसरे कड़ी जोड़कर वांछित लक्ष्य तक पहुँचा जाता है। वकालती जाँच में गुप्तचर अथवा जासूर के द्वारा भी तथ्यों का पता लगाना अन्वेषी पत्रकारिता के अन्तर्गत आता है। इसके संदर्भ में अर्जुन तिवारी का कथन है "सम–सामयिक विषयों, घटनाओं, स्थितियों और तथ्यों का क्रमबद्ध सूक्ष्म सर्वेक्षण अध्ययन और अनुसंधान के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है।"[6]

2. **आर्थिक पत्रकारिता :** कोई भी ऐसा व्यापारिक या आर्थिक व्यवहार जो व्यक्तियों, संस्थानों, राज्यों या देशों के बीच होता है, वह आर्थिक पत्रकारिता अर्थ–व्यवस्था के व्यापक गुण–दोषों की समीक्षा और विवेचना की धुरी पर केन्द्रित है। जिस प्रकार पत्रकारिता का उद्देश्य किसी भी व्यवस्था के गुण–दोषों को व्यापक आधार पर प्रचारित प्रसारित करना है, उसी प्रकार आर्थिक पत्रकारिता की भूमिका भी सार्थक है जब वह अर्थ–व्यवस्था के हर पहलू पर सूक्ष्म नजर रखते हुए उसका विश्लेषण करते और समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का प्रचार–प्रसार करने में सक्षम हो। अर्थ–व्यवस्था के मामले में आर्थिक पत्रकारिता व्यवस्था के मामले में आर्थिक पत्रकारिता व्यवस्था और उपभोक्ता के बीच सेतु का काम करता है। 'द इकोनामिक टाइम्स', 'दैनिक अकोला बाजार समाचार', 'व्यापार भारती', 'फाइलेन्शिय एक्सप्रेस' जैसे महत्वपूर्ण पत्रों द्वारा उद्योग–व्यवसाय की जानकारी दी जा रही है।

3. **ग्रामीण पत्रकारिता :** भारत गांवों का देश है। परम्परागत लोक–कला, लोक –संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य, हरित और श्वेत क्रान्ति द्वारा गांव के समग्र विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता कहा जाता है। श्री प्रवीण दीक्षित ने अपनी पुस्तक 'जनमाध्यम और पत्रकारिता' में लिखा है : "हमारी अपनी मान्यता के अनुसार जो पत्रकार नियमित रूप से ग्रामीण समाज की सम–सामाजिक आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से समाचार पत्र–पत्रिकाओं या रेडियो–टेलीविजन आदि जन–माध्यम में अपना योगदान करते हैं, उन्हें हम ग्रामीण पत्रकार और उनके ऐसे कृतित्व को साकारता या सक्रियता को ग्रामीण पत्रकारिता की संज्ञा से अभिहित कर सकते हैं।"[7]

4. **व्याख्या पत्रकारिता :** पत्रकारिता केवल घटनाओं की सूचना देना नहीं है। पत्रकार से अपेक्षा की जाती है कि वह घटनाओं की तह तक जाकर इसका अर्थ स्पष्ट करे और आम पाठक को बताए कि इस समाचार का क्या महत्व है। पत्रकार इस महत्व को बताने के लिए विभिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या करता है। इसके पीछे क्या कारण है। इसके पीछे कौन था और किसका हाथ है। इसका परिणाम क्या होगा। इसके प्रभाव से क्या होगा आदि की व्याख्या की जाती है।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 20.
2. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 20.
3. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 20.
4. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 21.
5. एन.सी. पंत, हिन्दी पत्रकारिता का विका, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2002, पृ.सं. 2.
6. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 22.
7. डॉ. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. सं. 23.

*****